ISSN:2583-8849



अद्विका साँचीहर
नाथद्वारा
राजसमंद , राजस्थान

स्त्री स्वयं का उद्धार करो

हे स्त्री !अपनी दशा देखो
और स्वयं का उद्धार करो
अपनी डोर लो अपने हाथ
यूं जीवन ना बेकार करो

बाहर कम और अंदर ज्यादा
सद्गुणों से श्रृंगार करो
एक ऊंचा व्यक्तित्व बनाने पर
तुम अब गहन विचार करो

लो परीक्षा तुम योग्यवर की
किसी को यूं ही ना स्वीकार करो
जो झांक पाए तुम्हारे भीतर
केवल उससे ही तुम प्यार करो

डर डर के क्यों जीना है
अब तैर समंदर पार करो
कब तक सहोगी तुम अन्याय
अब तुम भी पलट प्रहार करो

देवी भीतर प्रकट करके
तुम राक्षसों का संहार करो
ना उम्र, ना ओहदा
बस लायकी देखो
जिस से जैसा बनता है
वैसा उचित व्यवहार करो
है स्त्री अपनी दशा देखो
और स्वयं का उद्धार करो।

मुझको अम्बर की प्यास नहीं

अंधकार में चलते जाना
यह भी कोई चलना है?

पग पग पर ठोकर खाना
यह तो खुद को छलना है

अहंकार को पोषण देना
चेहरे पे कालिख मलना है

मुझको अम्बर की प्यास नहीं
मुझको तो धरा पर चलना है

परम सत्य की खोज में
मुझको तो पल पल गलना है

ठंडी ठंडी राख नहीं
बनके लपट अब जलना है

मुझको अम्बर की प्यास नहीं
मुझको तो धरा पर चलना है

मेरी मां तो धरती है
मुझे इसकी कोख में पलना है

नफ़रत का आकार नहीं
मुझे प्रेम के साँचे में ढलना है

मुझको अम्बर की प्यास नहीं
मुझको तो धरा पर चलना है।